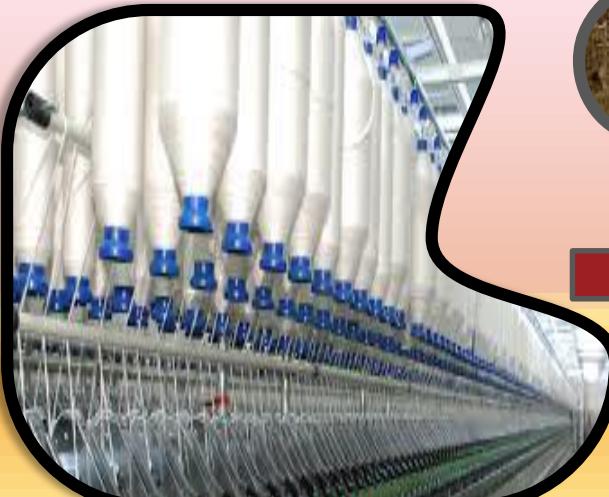


पंच गौरव

जिला पुस्तिका



जिला प्रशासन, भीलवाड़ा



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

जिला परिचय

➤ इतिहास

मेवाड़ राज्य व शाहपुरा रियासत के 'संयुक्त राजस्थान' में विलय के पश्चात् 1949 में भीलवाड़ा जिला अस्तित्व में आया। ऐसी मान्यता है कि भीलवाड़ा में मेवाड़ राज्य की एक टकसाल स्थापित थी, जहाँ 'भिलडी' नाम के सिक्के ढाले जाने से इस शहर का नाम 'भीलवाड़ा' पड़ा।

➤ भौगोलिक स्थिति

भीलवाड़ा 25.35 उत्तरी अक्षांश और 74.63 पूर्वी देशान्तर के साथ समुन्द्रतल से 421 मीटर की ऊचाई पर स्थित है। भीलवाड़ा जिला उत्तर में अजमेर जिले से, पूर्व में बून्दी जिले से, दक्षिण में उदयपुर, चित्तौड़गढ़, मध्यप्रदेश और पश्चिम में राजसमंद जिले से लगा हुआ है।

जिले की प्रमुख नदी बनास है, जो बिगोद के पास बेड़च व मेनाल नदी से मिलकर त्रिवेणी संगम बनाती है। यह त्रिवेणी संगम धार्मिक आस्था का केन्द्र है। यहाँ की अन्य मुख्य नदियाँ बेड़च, कोठारी, खारी, मेनाल व चन्द्रभागा हैं।

इन नदीयों पर प्रमुख बांधों में मेजा भराव क्षमता 30 फीट, कोठारी बांध 17 फीट, खारीबांध 21 फीट, सरेरी बांध 23 फीट, अरवड़ बांध 24 फीट, लड़की बांध 12 फीट एवं नाहरसागर बांध 15 फीट हैं।

जिले में मिट्टी से निर्मित मेजा बांध है। हमीरगढ़ इको-पार्क जिले से 18 कि.मी. दूर हमीरगढ़ में स्थित है, जो चिंकारा के लिये प्रसिद्ध है।

➤ खनिज

अम्रक उत्पादन में भीलवाड़ा काफी लम्बे समय से प्रसिद्ध है। अन्य मुख्य खनिज सीसा, जस्ता, सोपस्टोन, कार्ट्ज, डोलोमाईट, चूना पथर, क्लैसाइट, लाल पथर आदि हैं।

➤ दर्शनीय स्थल

जिले के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में बिजौलिया का मन्दाकिनी शिव मन्दिर, तिलस्वा महादेव मन्दिर, हरणी महादेव, सवाईभोज मन्दिर, चारभुजा मन्दिर, धनोप माता मन्दिर, माण्डलगढ़ दुर्ग व सिंगोली श्याम मन्दिर हैं।

➤ वस्त्र नगरी

भीलवाड़ा टेक्सटाईल उद्योग में अपना महन्चपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ सिंथेटिक वस्त्रों को तैयार करने वाली हजारों मीले होने से इसे वस्त्र नगरी भी कहा जाता है।

भीलवाड़ा जिला की संरचना

वर्ष 2025 की नवीनतम सूचना

क्र.सं.	मद	इकाई	जिला
1	जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल	वर्ग कि.मी	10104
2	लोक सभा क्षेत्र	संख्या	1
3	विधान सभा क्षेत्र	संख्या	7
4	उपखण्ड	संख्या	15
5	अतिरिक्त जिला कलक्टर कार्यालय	संख्या	2
6	सहायक कलक्टर न्यायालय	संख्या	1
6	तहसील	संख्या	15
7	उप तहसील	संख्या	13
8	पंचायत समिति	संख्या	13
9	नगर निगम	संख्या	1
	नगर परिषद	संख्या	1
10	नगर पालिका	संख्या	7
11	कुल कस्बे / शहर	संख्या	7
12	ग्राम पंचायत	संख्या	395

2. जनसंख्या – 2011

1	कुल जनसंख्या	संख्या	2011	2408523
	पुरुष	संख्या	2011	1220736
	स्त्री	संख्या	2011	1187787
2	कुल अनु० जाति	संख्या	2011	407947
	पुरुष	संख्या	2011	206332
	स्त्री	संख्या	2011	201615
3	कुल अनु० जनजाति	संख्या	2011	229273
	पुरुष	संख्या	2011	117026
	स्त्री	संख्या	2011	112247
4	साक्षर	संख्या	2011	1256126
	पुरुष	संख्या	2011	777582
	स्त्री	संख्या	2011	478544
5	जनसंख्या घनत्व	संख्या	2011	230
6	जनसंख्या की दस वर्षीय वृद्धि दर (2001–2011)	संख्या	2011	19.60
7	अनुमानित जनसंख्या	संख्या	2025	2934556

प्रस्तावना

राजस्थान में भाजपा सरकार ने अपनी पहली वर्षगांठ पर सभी जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है। भीलवाड़ा जिले में एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक उत्पाद एक पर्यटन स्थल, और एक खेल पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इन पांच तत्वों को उस जिले का पंच गौरव माना है। इसका मकसद जिले के समग्र विकास को बढ़ावा देना है। उद्योग, प्रजाति, कृषि, पर्यटन और खेल विभाग नोडल विभाग के तौर पर काम करेंगे।

टेक्स्टाइल उत्पाद एवं रेडीमेड गारमेंट भीलवाड़ा की पहचान विश्व में टेक्स्टाइल सिटी के रूप में है। भीलवाड़ा में टेक्स्टाइल की शुरुआत 1938 से हुई। सबसे पहले यहां मेवाड़ मिल की स्थापना हुई। उसके बाद 1962 में राजस्थान स्पिनिंग और बुनाई की मिल की स्थापना हुई थी। वर्तमान में 20 से अधिक स्पिनिंग मिल, 400 से अधिक विविंग उद्योग, 20 से अधिक प्रोसेस हाउस, 150 टीएफओ उद्योग संचालित है। प्रतिवर्ष 120 करोड़ मीटर कपड़ा तैयार होता है। इसमें डेनिम भी शामिल है। वर्तमान में प्लास्टिक की खाली वेस्ट बोतलों से भी धागा व कपड़ा बनाया जा रहा है।

बास्केटबॉल में भीलवाड़ा ने अपनी धाक जमाई है। स्व० श्री बी.एम.दिवाकर को भीलवाड़ा में बास्केटबॉल का भीष्मपितामह माना जाता है। भीलवाड़ा के सुरेन्द्र कटारिया को 1973 में बास्केटबॉल में अर्जुन अवार्ड का खिताब मिला। बास्केटबॉल की दुनिया में भारत के बेहतरीन खिलाड़ी की खोज की जाए तो महज एक नाम सामने आता है वह हैं सुरेन्द्र कुमार कटारिया। बास्केटबॉल में बेहतरीन प्रदर्शन के साथ कोच के रूप में सेवाएं देने पर उन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

छोटे नागपुर के रूप में विख्यात मांडलगढ़ व बीगोद क्षेत्र में बागवानों में संतरा का उत्पादन हो रहा है। संतरों की पैकिंग कर जयपुर दिल्ली सहित देश भर के कई शहरों में भेजे जाते हैं। यहां के संतरों की मिठास नागपुर के संतरों की तरह होने से लोग काफी पसंद करते हैं।

मांडलगढ़ किला—भीलवाड़ा से 54 किलोमीटर दूर है। मेवाड़ के इतिहास में प्रसिद्ध तीन दुर्गों में चित्तौड़गढ़ के बाद दूसरा स्थान मांडलगढ़ का है। मंडिया भील ने मांडलगढ़ किले का निर्माण कराया। यह भव्य गढ़ है जिसमें मंदिर है। वृताकार होने के कारण ही विभिन्न शिलालेखों में इस दुर्ग को मंडलाकृतिगढ़ या मंडलाकृति महादुर्ग के नाम से उल्लेख किया गया है।

अर्जुन का पेड़, जिसे अंग्रेजी में अर्जुन ट्री (Arjun Tree) भी कहते हैं, एक भारतीय सदाबहार वृक्ष है जिसकी छाल और फल आयुर्वेद में औषधीय गुणों के लिए उपयोग किए जाते हैं। इसकी छाल हृदय रोगों, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, और अन्य बीमारियों के लिए फायदेमंद मानी जाती है। संस्कृत में 'अर्जुन' शब्द का अर्थ 'सफेद' या 'स्वच्छ' होता है।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सुजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

एक जिला एक वनस्पति – अर्जुन



अर्जुन विवरणिका



1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2. प्रस्तावना / भूमिका
3. उत्पाद का वर्तमान परिदृश्य
4. आयोजित गतिविधियाँ (प्रदर्शनी, कार्यशाला, सेमिनार)
5. सम्बन्धित गतिविधियों की फोटो
6. उपलब्धियां
7. आगामी कार्य योजना

अर्जुन वृक्ष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अर्जुन वृक्ष भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण वृक्ष रहा है। इसकी उपस्थिति न केवल प्राकृतिक पर्यावरण में महत्वपूर्ण रही है, बल्कि भारतीय आयुर्वेद, धार्मिक ग्रंथों और लोककथाओं में भी इसका विशेष उल्लेख मिलता है। इसकी औषधीय उपयोगिता और सांस्कृतिक महत्व इसे एक पवित्र और बहुपयोगी वृक्ष के रूप में स्थापित करते हैं।

1. वैदिक एवं पुराणों में उल्लेख –

अर्जुन वृक्ष का उल्लेख वेदों और पुराणों में मिलता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में विभिन्न औषधीय पौधों का उल्लेख किया गया है, जिसमें अर्जुन वृक्ष भी शामिल है। इसे जीवनरक्षक वृक्ष माना जाता है, जो हृदय रोगों और रक्त संचार से संबंधित समस्याओं के उपचार में सहायक है। स्कंद पुराण और पद्म पुराण में अर्जुन वृक्ष को पवित्र वृक्ष माना गया है और इसे धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयोग करने की बात कही गई है। गरुड़ पुराण में इसका उपयोग विशेष रूप से स्वास्थ्य और आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए बताया गया है।

2. आयुर्वेद में अर्जुन वृक्ष का महत्व –

अर्जुन वृक्ष का सबसे पहला और व्यापक रूप से चिकित्सा के क्षेत्र में उपयोग आयुर्वेद में हुआ। आयुर्वेद के दो प्रमुख ग्रंथों चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में अर्जुन वृक्ष का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है। चरक संहिता में अर्जुन की छाल को हृदय रोगों, रक्त विकारों और मधुमेह के उपचार में प्रभावी बताया गया है। सुश्रुत संहिता में अर्जुन वृक्ष को रक्तस्राव रोकने और घावों के उपचार में उपयोगी बताया गया है। इसके अलावा, भावप्रकाश निघंटु और अन्य आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी इसे “हृदय का रक्षक” कहा गया है।

4. सिद्ध, यूनानी और अन्य पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में उपयोग –

अर्जुन वृक्ष न केवल आयुर्वेद बल्कि सिद्ध और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों में भी उपयोग किया जाता रहा है। सिद्ध चिकित्सा में इसका उपयोग पाचन समस्याओं, मूत्र विकारों और त्वचा रोगों के इलाज में किया जाता था। यूनानी चिकित्सा में इसे “कळ्ब (हृदय) के लिए लाभकारी” माना गया और इसे हृदय संबंधी विकारों के उपचार में प्रयोग किया गया। तिब्बती चिकित्सा में भी अर्जुन वृक्ष को एक महत्वपूर्ण औषधि के रूप में स्थान मिला है।

5. मध्यकालीन भारत और मुगलकाल में अर्जुन वृक्ष –

मध्यकाल में, जब हकीमी चिकित्सा (यूनानी पद्धति) का प्रभाव बढ़ा, तब भी अर्जुन वृक्ष की महत्ता बनी रही। मुगल शासकों के दौर में, शाही हकीम अर्जुन की छाल को औषधीय टॉनिक के रूप में इस्तेमाल करते थे। कुछ ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार, मुगल बादशाहों की दवाओं में अर्जुन छाल का प्रयोग खासकर हृदय रोगों और रक्त संचार की समस्याओं के लिए किया जाता था।

6. ब्रिटिश काल में वैज्ञानिक अध्ययन –

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय औषधीय पौधों का गहन अध्ययन किया गया। 19वीं और 20वीं सदी में अर्जुन वृक्ष पर कई वैज्ञानिक शोध हुए। अंग्रेजों द्वारा स्थापित औषधीय बागानों में अर्जुन वृक्ष को विशेष स्थान दिया गया। 1910 में, भारतीय औषधीय विज्ञान संस्थान द्वारा किए गए शोध में अर्जुन की छाल को कार्डियोटॉनिक (हृदय के लिए टॉनिक) के रूप में मान्यता दी गई। 20वीं शताब्दी में, आयुर्वेदिक फार्मास्युटिकल कंपनियों ने अर्जुन पर आधारित हृदय संबंधी दवाएँ तैयार करनी शुरू कीं।

7. आधुनिक युग में अर्जुन वृक्ष की महत्ता –

आज, अर्जुन वृक्ष के औषधीय गुणों को आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है। कई शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि इसकी छाल में टैनिन, फ्लेवोनॉइड्स, ट्राइट्रपेनोइड्स और ग्लाइकोसाइड्स जैसे महत्वपूर्ण रसायन होते हैं, जो हृदय और रक्त संचार प्रणाली के लिए लाभकारी हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान और वैज्ञानिक संस्थानों ने अर्जुन पर कई शोध किए हैं, जिनमें पाया गया कि यह हृदय रोगों के लिए प्राकृतिक उपचार का एक प्रभावी स्रोत हो सकता है। विश्व स्तर पर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अर्जुन वृक्ष के औषधीय गुणों को मान्यता दी है।

8. पर्यावरण और सामाजिक महत्त्व –

इतिहास में अर्जुन वृक्ष न केवल औषधीय कारणों से बल्कि पर्यावरणीय कारणों से भी महत्वपूर्ण रहा है। इसे नदियों और तालाबों के किनारे लगाया जाता था, क्योंकि यह मिट्टी कटाव को रोकता है। कई प्राचीन संस्कृतियों में इसे “पर्यावरण प्रहरी” माना गया है। भारत में कई राज्यों में अर्जुन वृक्षारोपण अभियान चलाए गए हैं ताकि इसकी औषधीय और पारिस्थितिकीय महत्ता को बनाए रखा जा सके।

अर्जुन वृक्षः प्रस्तावना / भूमिका –

अर्जुन वृक्ष भारतीय जैव विविधता, आयुर्वेदिक चिकित्सा और पर्यावरण संरक्षण का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह न केवल औषधीय गुणों से भरपूर है, बल्कि पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में भी सहायक है। भारत में अर्जुन वृक्ष का उपयोग हजारों वर्षों से किया जा रहा है, और यह अब वैश्विक स्तर पर भी अपनी महत्ता स्थापित कर चुका है।

1. अर्जुन वृक्ष का प्राकृतिक परिचय –

अर्जुन एक विशाल और सदाबहार वृक्ष है, जो मुख्य रूप से भारत, श्रीलंका, म्यांमार और अन्य दक्षिण एशियाई देशों में पाया जाता है। यह आमतौर पर नदियों, झीलों और जल स्रोतों के आस पास उगता है, जिससे मिट्टी का कटाव रोकने में सहायता मिलती है।

वैज्ञानिक नाम: *Terminalia arjuna*

परिवार: *Combretaceae*

ऊंचाई: 20–25 मीटर तक

छाल का रंग: हल्का भूरा या लालिमा युक्त

पत्तियाँ: गहरे हरे रंग की और अंडाकार

फूल: छोटे, सफेद या हल्के पीले

फल: अंडाकार और लकड़ी के समान कठोर

2. अर्जुन वृक्ष का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व –

भारतीय संस्कृति में वृक्षों को विशेष महत्व दिया गया है, और अर्जुन वृक्ष भी उनमें से एक है। हिंदू धर्म में: इसे पवित्र वृक्षों में से एक माना जाता है। धार्मिक अनुष्ठानों में इसकी लकड़ी और पत्तियों का उपयोग किया जाता है। बौद्ध धर्म में: बौद्ध ग्रंथों में इसे आध्यात्मिक शांति प्रदान करने वाला वृक्ष माना गया है। भारतीय लोककथाओं में: इसे वीरता, शक्ति और सहनशक्ति का प्रतीक माना गया है।

3. औषधीय उपयोगिता और आयुर्वेद में भूमिका –

अर्जुन वृक्ष की सबसे प्रमुख पहचान इसकी औषधीय गुणों के कारण है। आयुर्वेद में इसे “हृदय का रक्षक” कहा जाता है क्योंकि इसकी छाल हृदय रोगों, रक्तचाप नियंत्रण और कोलेस्ट्रॉल प्रबंधन में सहायक होती है। चरक संहिता: अर्जुन को हृदय संबंधी विकारों के लिए अत्यंत प्रभावी बताया गया है। सुश्रुत संहिता: इसमें अर्जुन को रक्त संचार को नियंत्रित करने और घाव भरने में सहायक बताया गया है। भावप्रकाश निघंटु: इसे हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और लिवर से संबंधित समस्याओं में उपयोगी माना गया है।

4. अर्जुन वृक्ष के औषधीय गुण –

अर्जुन वृक्ष के सभी भागों में औषधीय गुण होते हैं, विशेष रूप से इसकी छाल का उपयोग आयुर्वेदिक और आधुनिक चिकित्सा में किया जाता है।

हृदय स्वास्थ्य: अर्जुन की छाल से बने काढ़े या चूर्ण का सेवन करने से हृदय की मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं।

रक्तचाप नियंत्रण: यह रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक होता है और हाइपरटेंशन से बचाव करता है।

कोलेस्ट्रॉल प्रबंधन: अर्जुन की छाल में उपस्थित फ्लेवोनॉइड्स और टैनिन शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल (स्क्रस) को कम करने में मदद करते हैं।

मधुमेह नियंत्रण: यह रक्त में शर्करा स्तर को नियंत्रित करने में सहायक होता है।

घाव भरने में सहायक: अर्जुन के पत्तों और छाल से बने लेप को त्वचा रोगों और चोटों के उपचार में प्रयोग किया जाता है।

5. अर्जुन वृक्ष और पर्यावरण संरक्षण में योगदान –

अर्जुन वृक्ष का पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान है। यह जल स्रोतों के पास उगने वाला वृक्ष है और मृदा अपरदन (Soil Erosion) को रोकने में सहायक होता है। इसकी जड़ें पानी को संरक्षित करने और भूजल स्तर को बनाए रखने में मदद करती हैं। इसकी पत्तियाँ जैविक खाद के रूप में उपयोगी होती हैं, जिससे कृषि में उर्वरता बनी रहती है। यह वायु को शुद्ध करने में सहायक होता है और कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषण में मदद करता है।

6. अर्जुन वृक्ष से बनने वाले उत्पाद –

आज के समय में अर्जुन वृक्ष से कई औषधीय और व्यावसायिक उत्पाद बनाए जाते हैं, जो वैश्विक स्तर पर भी लोकप्रिय हो रहे हैं।

अर्जुन छाल का चूर्ण : हृदय रोग और उच्च रक्तचाप के उपचार के लिए

अर्जुन अर्क : जो हृदय की मांसपेशियों को मजबूत करने और रक्त संचार को सुधारने में सहायक होता है

अर्जुन चाय: जिसे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए पिया जाता है

अर्जुन तेल: जो त्वचा रोगों और जोड़ों के दर्द में लाभकारी होता है

हर्बल सप्लीमेंट्स: कई आयुर्वेदिक कंपनियाँ अर्जुन आधारित कैप्सूल और गोलियाँ बना रही हैं

7. अर्जुन वृक्ष और वैश्विक पहचान –

आज अर्जुन वृक्ष के औषधीय गुणों को केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में स्वीकार किया जा रहा है। अमेरिका और यूरोप: कई शोध पत्रों में अर्जुन को प्राकृतिक हृदय टॉनिक के रूप में स्वीकार किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन हृदय रोगों के प्राकृतिक उपचार में अर्जुन वृक्ष के उपयोग को मान्यता दी गई है। भारत सरकार की योजनाएँ: अर्जुन वृक्ष के व्यावसायिक उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे कि "राष्ट्रीय औषधीय पौध योजना" प्रमुख है।

8. अर्जुन वृक्ष के संरक्षण की आवश्यकता –

हालांकि अर्जुन वृक्ष कई प्राकृतिक और औषधीय लाभ प्रदान करता है, लेकिन वनों की कटाई और अंधाधुंध उपयोग के कारण इसकी संख्या में कमी आई है। इसके संरक्षण के लिए निम्नलिखित कदम उठाने की आवश्यकता है:

- **वृक्षारोपण अभियान:** अधिक से अधिक अर्जुन वृक्ष लगाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाना।
- **सतत कटाई (Sustainable Harvesting):** औषधीय उपयोग के लिए इसकी छाल को अत्यधिक मात्रा में न काटकर वैज्ञानिक तरीके से उपयोग किया जाए।
- **सरकारी योजनाओं का समर्थन:** किसानों को अर्जुन की खेती के लिए प्रोत्साहित करना और उन्हें सब्सिडी प्रदान करना।

निष्कर्ष –

अर्जुन वृक्ष केवल एक औषधीय वृक्ष नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण और आधुनिक चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण अंग भी है। इसकी छाल, पत्तियाँ और फल न केवल रोगों के उपचार में सहायक हैं, बल्कि यह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी योगदान देता है। बढ़ते शहरीकरण और वनों की कटाई के कारण इसके संरक्षण की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक हो गई है। हमें अर्जुन वृक्ष के महत्व को समझते हुए इसे बचाने और बढ़ाने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

अर्जुन वृक्ष का वर्तमान परिदृश्य

अर्जुन वृक्ष प्राचीन काल से लेकर आज तक औषधीय, पर्यावरणीय और व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण बना हुआ है। आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान, औद्योगिक उपयोग और पारिस्थितिकी संरक्षण के बढ़ते प्रयासों के कारण यह वृक्ष आज वैश्विक स्तर पर भी चर्चा में है। हालांकि, वनों की कटाई और बढ़ती मांग के कारण इसके संरक्षण को लेकर भी चिंता बढ़ रही है। वर्तमान समय में अर्जुन वृक्ष से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति निम्नलिखित है:

1. अर्जुन वृक्ष की वर्तमान उपलब्धता और प्राकृतिक वितरण –

अर्जुन वृक्ष मुख्य रूप से भारत, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और म्यांमार में पाया जाता है। यह विशेष रूप से नदियों और जल स्रोतों के किनारे उगता है।

भारत में प्रमुख स्थान उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के अनुसार, भारत में अर्जुन वृक्ष की संख्या में गिरावट देखी गई है, विशेष रूप से शहरीकरण और वनों की कटाई के कारण। पर्यावरण मंत्रालय की "State of Forest Report 2023" के अनुसार, औषधीय पौधों की मांग में वृद्धि के बावजूद प्राकृतिक जंगलों में अर्जुन वृक्षों की संख्या में 15–20% की कमी देखी गई है। नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड ने अर्जुन वृक्ष को 'संरक्षित औषधीय पौधों' की सूची में रखा है, ताकि इसकी व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा सके।

2. अर्जुन वृक्ष का व्यावसायिक और औद्योगिक उपयोग –

आज के समय में अर्जुन वृक्ष का उपयोग कई उद्योगों में किया जा रहा है, विशेष रूप से आयुर्वेदिक और हर्बल उत्पाद निर्माण में औषधीय और फार्मास्युटिकल उद्योग में अर्जुन की छाल से बनने वाले उत्पादों की मांग न केवल भारत में बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी बढ़ रही है। पतंजलि, डाबर, बैद्यनाथ, हिमालया, श्री श्री आयुर्वेद, चरक फार्मा जैसी कंपनियाँ अर्जुन से बने उत्पाद बेच रही हैं। अर्जुन आधारित कैप्सूल, चूर्ण, अर्क, तेल और चाय का उत्पादन बढ़ा है। CSIR और आयुष मंत्रालय द्वारा किए गए शोधों में पाया गया कि अर्जुन की छाल में एंटीऑक्सीडेंट और कार्डियोप्रोटेक्टिव गुण होते हैं, जो इसे हृदय रोगों के लिए प्रभावी बनाते हैं।

भारत में अर्जुन की छाल और अर्क का बाजार लगभग ₹ 500 करोड़ का हो चुका है और 2030 तक इसके दोगुना होने की संभावना है। WHO (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने अर्जुन को 'हृदय रोगों के लिए प्राकृतिक औषधि' के रूप में मान्यता दी है। अर्जुन अर्क और पत्तियों का उपयोग त्वचा रोग, एंटी-एजिंग क्रीम और हर्बल फेस वॉश बनाने में हो रहा है। आयुर्वेदिक साबुन और हेयर केयर प्रोडक्ट्स में भी अर्जुन के तत्वों का इस्तेमाल बढ़ा है।

3. अर्जुन वृक्ष का पर्यावरणीय महत्व और संरक्षण स्थिति –

अर्जुन वृक्ष न केवल औषधीय रूप से बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह नदियों और झीलों के किनारे लगाया जाता है, क्योंकि यह मृदा अपरदन (Soil Erosion) रोकता है। इसकी छाया और ऑक्सीजन उत्सर्जन क्षमता इसे शहरी वृक्षारोपण कार्यक्रमों के लिए आदर्श बनाती है। अर्जुन वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषण में भी मदद करता है, जिससे जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायता मिलती है। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड NMPB अर्जुन वृक्ष की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को 50% तक की सब्सिडी प्रदान कर रहा है। कई राज्यों में वन विभाग अर्जुन वृक्षारोपण अभियान चला रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ICAR की रिपोर्ट के अनुसार, अर्जुन वृक्ष के औषधीय गुणों को देखते हुए इसकी खेती में 30% की वृद्धि हुई है। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में अर्जुन वृक्ष की संगठित खेती की जा रही है।

4. अर्जुन वृक्ष से संबंधित वैज्ञानिक और चिकित्सा अनुसंधान –

आधुनिक विज्ञान ने अर्जुन वृक्ष के औषधीय गुणों को प्रमाणित किया है और इसे कई नई दवाओं में शामिल किया जा रहा है।

- हृदय रोगों पर अनुसंधान

AIIMS (दिल्ली) और ICMR (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च) द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि अर्जुन की छाल हृदय को मजबूत बनाने और रक्त संचार को सुधारने में सहायक है। 2022 में Journal of Ethnopharmacology में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, अर्जुन की छाल कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने और हृदय की मांसपेशियों को स्वस्थ रखने में प्रभावी है।

- कैंसर और मधुमेह पर अनुसंधान –

• Council of Scientific and Industrial Research के शोध में अर्जुन वृक्ष के तत्वों में एंटी-कैंसर और एंटी-डायबिटिक गुण पाए गए हैं। अर्जुन की छाल से बनी हर्बल चाय मधुमेह रोगियों के लिए लाभकारी मानी जा रही है।

5. अर्जुन वृक्ष की सामाजिक और आर्थिक भूमिका –

अर्जुन वृक्ष न केवल औषधीय और पर्यावरणीय रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह किसानों और ग्रामीण समुदायों के लिए आर्थिक लाभ का भी स्रोत है। किसानों के लिए आय का स्रोत, अर्जुन वृक्ष की छाल और बीज की कीमत बढ़ने के कारण किसान अब इसे आयुर्वेदिक खेती का हिस्सा बना रहे हैं। सरकार द्वारा अर्जुन वृक्ष की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए "औषधीय पौध संरक्षण योजना" के तहत किसानों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

- **रोजगार सूजन**

अर्जुन वृक्ष से जुड़े उद्योगों में 10,000 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिला है। औषधीय पौधों के निर्यात में भारत शीर्ष 5 देशों में शामिल है, और अर्जुन आधारित उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय मांग बढ़ रही है। NMPB के अनुसार, 2025 तक अर्जुन वृक्ष आधारित उद्योगों का कुल बाजार मूल्य ₹1000 करोड़ से अधिक होने की उम्मीद है।

अर्जुन पर आयोजित गतिविधियाँ (प्रदर्शनी, कार्यशाला, सेमिनार)

अर्जुन वृक्ष और उससे जुड़े उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पौधशालाओं में अत्यधिक मात्रा में अर्जुन के पौधे तैयार किया जा रहे हैं।

सेमिनार में प्रदर्शनियों के माध्यम से अर्जुन के पौधे के महत्व के बारे में लोगों को निरंतर जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है।

कृषि वानिकी में अर्जुन के पौधे को शामिल करने के लिए किसानों को जागरूक किया जा रहा है तथा अर्जुन के पौधे के आर्थिक व औषधीय महत्व के बारे में किसानों को अवगत कराया जा रहा है।

अर्जुन वृक्ष और उससे जुड़े उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन किया जाता है, जिनमें

औषधीय पौधों की प्रदर्शनी: जहाँ अर्जुन वृक्ष से संबंधित उत्पादों का प्रदर्शन किया जाता है।

कृषि एवं औषधीय पौधों की कार्यशालाएँ: जिनमें किसानों को अर्जुन वृक्ष की खेती और इससे होने वाले आर्थिक लाभ की जानकारी दी जाती है।

स्वास्थ्य सेमिनार: जिसमें आयुर्वेदिक विशेषज्ञ अर्जुन वृक्ष के औषधीय गुणों पर व्याख्यान देते हैं।

पर्यावरण संरक्षण अभियान: जिसमें अर्जुन वृक्ष के अधिक से अधिक रोपण हेतु जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं।

अर्जुन पर आगामी कार्य योजना –

- अधिक से अधिक मात्रा में अर्जुन के पौधे लगाने हेतु वृक्षारोपण अभियान चलाया जाएगा।
- आम लोगों को अर्जुन के पौधे के सामाजिक, आर्थिक व औषधीय महत्व के बारे में जागरूक किया जाएगा ताकि आम लोग अधिक से अधिक मात्रा में अर्जुन का पौधा लगायें।
- अर्जुन के पौधे से बनने वाले उत्पादों के महत्व के बारे में लोगों का अवगत कराया जाएगा।
- अर्जुन आधारित नए उत्पादों का विकास : जैसे अर्जुन आधारित जैविक कॉस्मेटिक्स और स्वास्थ्य उत्पाद को विकसित किया जाएगा।
- अर्जुन वृक्षारोपण अभियान का विस्तार : अधिक से अधिक क्षेत्रों में अर्जुन वृक्ष को लगाने हेतु योजनाएँ बनाई जाएँगी।
- वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा: अर्जुन वृक्ष के स्वास्थ्य लाभों पर और अधिक वैज्ञानिक अध्ययन किए जाएँगे।
- कृषकों को जागरूक बनाना: किसानों को इसकी खेती हेतु अधिक जानकारी और प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- निर्यात को बढ़ावा: अर्जुन उत्पादों के वैश्विक बाजार में निर्यात को और अधिक सशक्त बनाया जाएगा।

पौधशाला में पौध तैयार करने की प्रक्रिया



एक जिला एक उत्पाद – टेक्सटार्डल उत्पाद





भीलवाड़ा को राजस्थान की वस्त्र नगरी, राजस्थान का मेनचेस्टर नाम से भी जाना जाता है।

भीलवाड़ा पी वी सुटिंग उत्पादन में विश्व के सबसे बड़े कलस्टरों में से एक है।

नवीनतम धागा निर्माण तकनीकी ऑपन एण्ड स्पिनिंग में जिला राज्य में सबसे आगे है।

राज्य की सर्वप्रथम अत्याधुनिक तकनीकी की वोरटेक्स एवं एयरस्पन यार्न का उत्पाद भीलवाड़ा में हुआ।

जिले का सूती, पीवी डाइड यार्न, मिलान्ज यार्न, अपरम्परागत रेशों से धागा निर्माण में अग्रणी स्थान है।

नवीनतम धागा निर्माण तकनीकी ऑपन एण्ड स्पिनिंग में जिला राज्य में सबसे आगे है।



जिले में 18 से अधिक प्रोसेस हाउस स्थित हैं जिनमें अत्याधुनिक मशीनरी से कपड़ा डाई और फिनिश किया जा रहा है।

जिले के प्रोसेस हाउस अत्याधुनिक तकनीकी जेडएलडी (जिरो लिक्विड डिस्चार्ज) पर कार्य कर रहे हैं।

जिला डेनिम उत्पाद में तेजी से उभरता हुआ केन्द्र बन रहा है जिसके अन्तर्गत हाइस्पीड एयजेट विविंग मशीनों की स्थापना की जा रही है।

नवीनतम धागा निर्माण तकनीकी ऑपन एण्ड स्प्यनिंग में जिला राज्य में सबसे आगे है।



जिला रेडिमेड गारमेन्ट उत्पादन के क्षेत्र में भी तीव्र गति से विकसित हो रहा है।

जिले में अत्याधुनिक तकनीकी की सीमलेस गारमेन्ट प्लांट भी स्थापित एवं उत्पादनरत है।

जिला पीवी सूटिंग फेब्रिक, डेनिम फेब्रिक, पीवी यार्न, काटन यार्न का बड़ा निर्यातक है।

जिले में वस्त्र उद्योगों का तकनीकी सहायता हेतु एमएलवी टैक्सटाइल कालेज, निटरा (नार्थ इण्डियन टैक्सटाइल रिसर्च एसोसियेशन) जैसी संस्थान कार्यरत है।



एक जिला एक उत्पाद जिला भीलवाड़ा विजिन 2047

भीलवाड़ा जिले को वस्त्र नगरी के नाम से भी जाना जाता है। एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) के तहत “टैक्सटाईल प्रोडेक्ट” का चयन किया गया है। एक जिला एक उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा ओडीओपी नीति 2024 जारी की गई है। इस नीति के माध्यम से जिले में चयनित ओडीओपी उत्पाद आधारित नई सूक्ष्म एवं मध्यम इकाइयों के लिए लाभ प्रदान कर रोजगार के नये अवसर सृजित करना।

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2024 एवं समकक्ष नीतियों के माध्यम से इकाइयों को अधिकतम लाभ प्रदान करके भीलवाड़ा जिले में विनिर्माण और सेवा क्षेत्र की इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहित करना।

भीलवाड़ा पीवी ब्लॉडेड उत्पादन में विश्व का प्रमुख केन्द्र है, यहां अत्याधुनिक प्रोजेक्टाईल, एयरजेट, पीकानोल रेपीयर लूमों पर विश्वस्तरीय सूटिंग उत्पादित होती है। जिला प्रतिवर्ष 85 करोड़ मीटर सूटिंग उत्पादन कर 10 प्रतिशत सूटिंग का निर्यात कर रहा है। विभाग का लक्ष्य है कि 2047 तक 2.00 लाख करोड़ पीवी सूटिंग उत्पादन स्तर प्राप्त करना और निर्यात में 30 प्रतिशत तक भागीदारी सुनिश्चित करना।

विविंग क्षेत्र में मिल इकाइयों द्वारा लगभग 700 करोड़ रु. मूल्य का निर्यात किया गया है। जिसे 2047 तक 1500 करोड़ रुपये तक पहुँचाने का लक्ष्य रहेगा।

कॉटन स्पीनिंग इकाईयों अपने उत्पादों की श्रेष्ठ गुणवत्ता के आधार पर 65 से अधिक देशों को निर्यात कर रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2023–24 में लगभग 3000 करोड़ रु. का निर्यात किया गया है। इसे 2047 तक 6000 करोड़ रु. तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है।

वर्तमान में भीलवाड़ा में लगभग 40 करोड़ मीटर डेनिम प्रतिवर्ष का उत्पादन हो रहा है, जिसे 2047 तक बढ़ाकर 100 करोड़ मीटर उत्पादन ले जाना है।

टैक्सटाईल सेक्टर में उभरते क्षेत्र डेनिम, रेडिमेड गारमेंट एवं अपैरल, टेक्निकल टैक्सटाईल (मेडिकल, डिफेंस, ऑटोमोबाइल, ड्रेन, बस, ऑटोमोबाइल्स के लिए लेमिनेटेड फेब्रिक्स, प्रतिष्ठित कार उत्पादों के लिए सीट फेब्रिक्स, इण्डस्ट्रीयल टैक्सटाईल इत्यादि) में उद्यमों की स्थापना एवं रोजगार सृजित कर राजस्थान निर्यात नीति के माध्यम से जिले को निर्यात का हब बनाना।

भीलवाड़ा टेक्स्टाईल पार्क

राज्य सरकार द्वारा भीलवाड़ा में टेक्स्टाईल पार्क विकसित करने हेतु रूपाहेली में 1292.14 बीघा भूमि आवंटित की गयी है।

राईजिंग राजस्थान में भीलवाड़ा ओडीओपी

राईजिंग राजस्थान के अन्तर्गत दिनांक: 08.11.2024 को होटल ग्लोरिया इन, भीलवाड़ा में जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया गया जिसमें



भीलवाड़ा जिले में कुल 143 एमओयू किये गये, जिसमें 10340.71 करोड़ रुपये का निवेश व 23697 रोजगार आने की संभावना है। इनमें एक जिला-एक उत्पाद के तहत टैक्स्टाईल सेक्टर के 62 एमओयू, 4621.5 करोड़ रुपये के संपन्न किये गये, जिसमें 9320 रोजगार मिलने की संभावना है। वर्तमान में राजनिवेश पोर्टल पर 502 एमओयू में से टैक्स्टाईल एवं अपैरल क्षेत्र में 138 एमओयू संपादित हो चुके हैं, जिनमें प्रस्तावित निवेश 6956.67 करोड़ रुपये एवं रोजगार 36495 है।

दिनांक 07.02.2025 से 11.02.2025 तक आयोजित भीलवाड़ा उद्योग एवं व्यापार मेला 2025 में पंच गौरव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सैण्ड आर्ट का निर्माण कराया गया।



भीलवाड़ा उद्योग एवं व्यापार मेला 2025 में पंच गौरव एवं इसके अन्तर्गत ओडीओपी उत्पाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।



राइजिंग राजस्थान के अन्तर्गत दिनांक 22.10.2024 को शाहपुरा तथा दिनांक: 08.11.2024 को भीलवाड़ा में आयोजित जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट के दौरान एक जिला एक उत्पाद की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया



एक जिला एक खेल – बास्केटबॉल



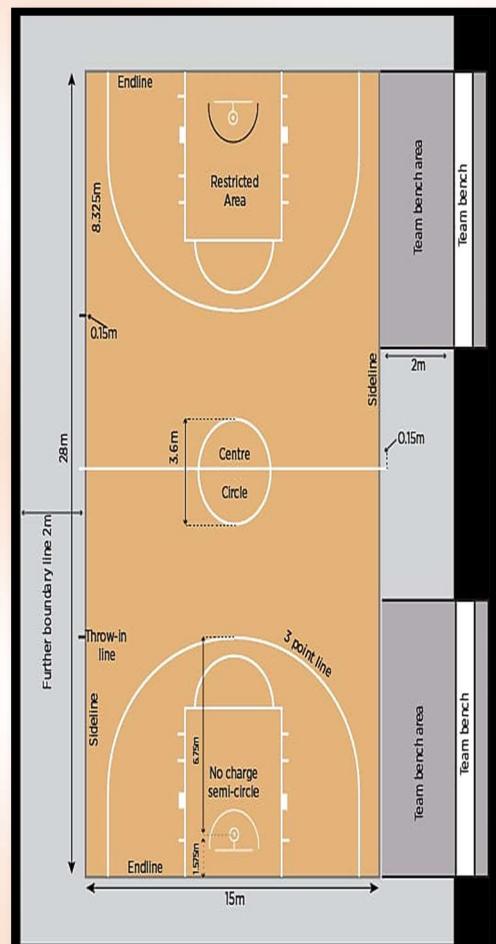
परिचय :-

दुनिया का दूसरा सर्वाधिक तेज गति से खेले जाने वाले बास्केटबॉल खेल का आविष्कार कनाडाई शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षक जेम्स नेस्मिथ ने संप्रन्गफिड मेसाचुसेट्स में किया। भारत में बास्केटबॉल कि शुरुवात कनाडा के टी डंकन पेटन ने की। पहली राष्ट्रीय बास्केटबॉल चौम्पियनशिप 1934 में नई दिल्ली में आयोजित कि गई।

भारतीय बास्केटबाल संघ की स्थापना सन 1950 में की गई। इसी क्रम में राजस्थान बास्केटबॉल संघ की स्थापना 1951 में की गई। तथा उसके बाद यह खेल राजस्थान में इतना प्रसिद्ध हो गया तथा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर यहाँ के खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण तत्कालीन राज्य सरकार ने इस खेल को राज्य खेल घोषित किया।

बास्केटबाल के बारे में सामान्य जानकारी :-

- टीम के कुल सदस्यों की संख्या – 12
- मैदान में खेलने वाले सदस्यों की संख्या – 05 (प्रति टीम)
- अतिरिक्त सदस्यों की संख्या – 07
- बास्केटबॉल के मैदान की $28\text{ (लम्बाई)} \times 15\text{ (चौड़ाई)}$ मीटर एवं लाईन की मोटाई 5 सेंटीमीटर होगी।
- मध्य वृत्त व एनी वृत्तों का अर्धव्यास 1.80 मीटर होता है।
- बास्केटबॉल बोर्ड की चौड़ाई 1.05 मीटर, लम्बाई 1.80 एवं मोटाई 3 सेंटीमीटर होता है।
- बास्केटबॉल खेल की अवधि चार क्वार्टर की (10–2–10) 5–10 (10–2–10) होती है।
- कोई भी खिलाड़ी पांच सेकंड से अधिक समय तक खड़ा नहीं रह सकता।
- जब किसी टीम के खिलाड़ी के पास बॉल आ जाती है तो 24 रोकंड वो अंदर बॉल को बास्केट के लिए फेंकना पड़ता है चाहे बास्केट हो या न हो।



भीलवाड़ा जिले में बास्केटबॉल :—

भीलवाड़ा जिले का बास्केटबॉल से बहुत गहरा एंव पुराना इतिहास रहा है । स्व0 श्री बी.एम.दिवाकर जी जो कि भीलवाड़ा जिले में बास्केटबॉल के भीष्म पितामह के रूप में जाने जाते हैं, इन्होने ओलम्पिक, अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय निर्णायक की भूमिका में प्रतिनिधित्व किया है । श्री सुरेन्द्र कटारिया अर्जुन अवार्ड प्राप्त करनें वाले खिलाड़ियों में से एक है ।

भीलवाड़ा के गौरव

भीलवाड़ा बास्केटबॉल के
“भीष्मपितामह”



स्व. श्री बी. एम. दिवाकर

भीलवाड़ा के गौरव

“अर्जुन अवार्डी”



श्री सुरेन्द्र कटारिया

भीलवाड़ा जिले से सब जूनियर, यूथ, जूनियर व सीनियर वर्गों में एवम शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 14 वर्ष, 17 वर्ष व 19 वर्ष वर्गों में लगभग 335 खिलाड़ियों (बालक एवम बालिकाएँ) ने राजस्थान टीम का प्रतिनिधित्व कर भीलवाड़ा का गौरव बढ़ाया है । राजस्थान में कई मैडल जीतने में भीलवाड़ा के खिलाड़ियों का विशेष योगदान रहा है । भीलवाड़ा जिले से विभिन्न टीमों में लगभग 3500 बालक बालिकाएँ खेल चुके हैं ।

भीलवाड़ा राजस्थान में ही नहीं अपितु भारत के बास्केटबॉल जगत में अपना एक अहम स्थान रखता है । खिलाड़ियों के साथ साथ भीलवाड़ा जिला बास्केटबॉल संघ प्रतियोगिता के आयोजन में भी पीछे नहीं है । पूर्व समय में यहीं 5 जूनियर नेशनल, 1 यूथ नेशनल, 2 मिनी नेशनल, 2 वेर्स्ट जोन बास्केटबॉल प्रतियोगिता, 16 बार नेहरु गोल्डकप, ऑल इण्डिया बास्केटबॉल प्रतियोगिता, फेडरेशन कप ऑल इण्डिया बास्केटबॉल प्रतियोगिता व 29 बार स्टेट बास्केटबॉल प्रतियोगिता के भव्य एवं सफल आयोजन किये जा चुके हैं । इसी क्रम में भीलवाड़ा की 2 बालिकाएँ भी भारतीय बास्केटबॉल के प्रशिक्षण शिविर में (इण्डिया केम्प) में चयनित होकर रह चुकी हैं । राशि खोतानी दो बार व सताक्षी राठौड़ एक बार इण्डिया केम्प में रह चुकी है ।

भीलवाड़ा के गौरव



श्री मोहित भण्डारी

उपलब्धियाँ

- एशियन स्कूल बास्केटबॉल प्रतियोगिता 1997, नई दिल्ली
- एशियन जूनियर बास्केटबॉल प्रतियोगिता 1998 कलकत्ता
- एशियन यूथ बास्केटबॉल प्रतियोगिता 2000, कतर
- एशियन बास्केटबॉल सीनियर प्रतियोगिता 2001, चीन
- चौम्बीयन कप, क्वालीफाइन 2005 कजाकिस्तान
- फीबा एशिया चौम्बीयन कप मई 2008, कुवैत
- सहायक कोच, भारतीय सीनीयर टीम 2009 जर्काता, इण्डोनेशिया
- सहायक कोच, भारतीय सीनीयर टीम 2009 चीन
- सहायक कोच, भारतीय सीनीयर टीम 2022 इरान



भीतवाड़ा के गौरव



श्री मोहम्मद हारुन

उपलब्धियाँ

1. एशियन बास्केटबॉल प्रतियोगिता 1995 -96
सियोल (दक्षिण कोरिया)



श्री शिव खोईवाल



श्री दिपक चौधरी

उपलब्धियाँ

1. दक्षिण एशियाई बास्केटबॉल चौंपियनशिप
(नवंबर 2021), ढाका, बांग्लादेश में स्वर्ण पदक
2. विश्व कप क्वालीफायर विंडो 3, मनीला, फिलीपींस
(जुलाई 2022) में भारत का प्रतिनिधित्व किया ।

जिला भीलवाडा में बास्केटबॉल के कई ग्राउंड हैं। नियमित रूप से चलने वाले ग्राउंड्स का विवरण इस प्रकार है।

क्र. स.	खेल मैदान की उपलब्धता स्थान	ग्राउंड संख्या	प्रशिक्षक की उपलब्धता	खिलाड़ियों की संख्या
1	सुखाड़िया स्टेडियम बास्केटबॉल मैदान	02	निशा राजपूत	25–30
2	नगर परिषद बास्केटबॉल मैदान	02	प्यारे लाल खोईवाल अजय भंडारी राजेश नैनावटी	150–160
3	कावा खेड़ा बास्केटबॉल मैदान	01	विजय बाबेल	40–50
4	करेड़ा बास्केटबॉल मैदान	02	नरेन्द्र दात्या राजेश आचार्य	20–25
5	विवेक एकेडमी बास्केटबॉल मैदान	01	विवेक लोहिया	20–25
6	लेबर कॉलोनी बास्केटबॉल मैदान	01	मोहम्मद जावेद	20–25
7	मांडल बास्केटबॉल मैदान	01	ओम रुणवाल	15–20

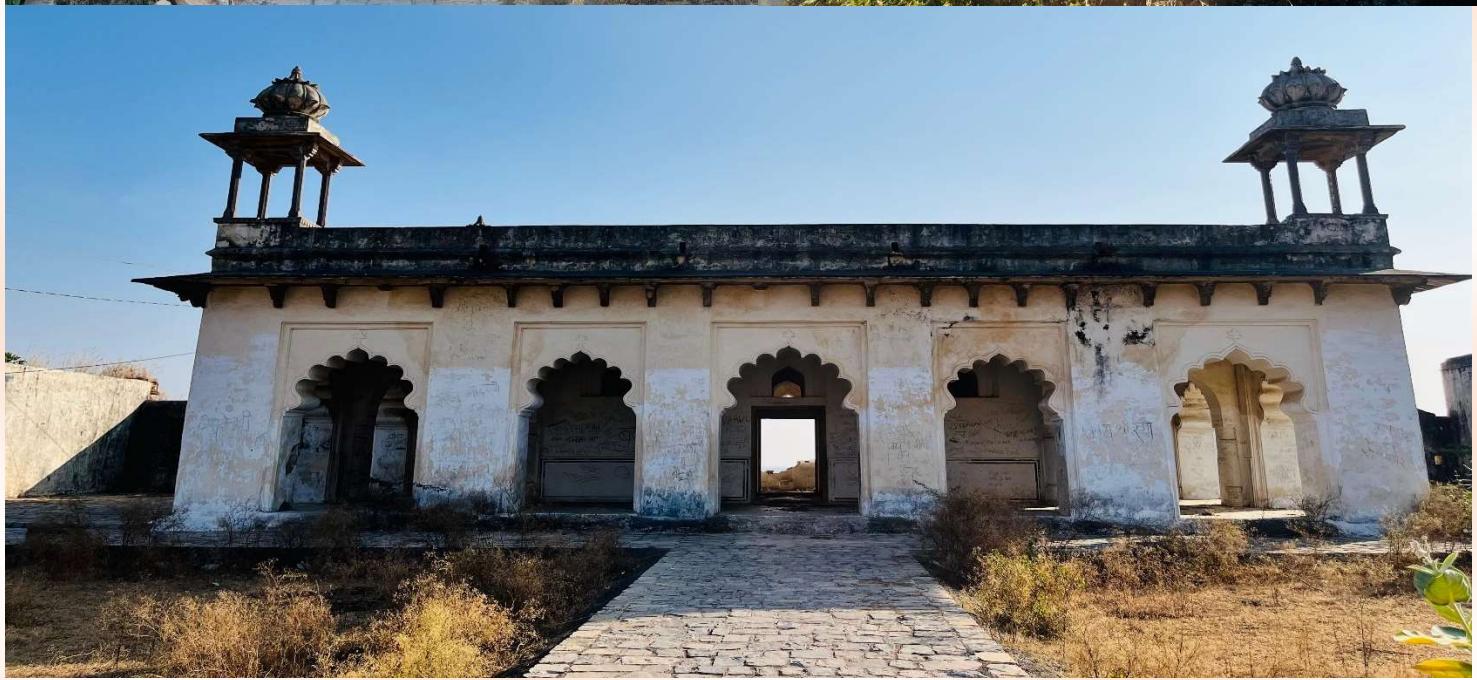
कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य एवं गतिविधियाँ :—

- जिले के प्रमुख स्टेडियम सुखाड़िया स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स पर एवं शहर में दो अन्य बास्केटबॉल के सिमेन्टेड कोर्ट पर बच्चे रोज अभ्यास करते हैं। सुखाड़िया स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स पर चार कोर्ट का बास्केटबॉल स्टेडियम बनवाया जाना प्रस्तावित है।
- शहर एवं ब्लॉक स्तर पर निर्मित बास्केटबॉल खेल मैदानों पर नियमित अभ्यास करवाये जाने की व्यवस्था करना।
- बास्केटबॉल खेल के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने के लिए शिविरों का आयोजन करवाया जाना।
- सोशल मिडिया पर बास्केटबॉल खेल के छोटे वीडियो अपलोड कर खेल के बारे में आम लोगों की रुचि को बढ़ाना।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय (लाख रुपयें में) — 1,25,68000 रुपये व्यय करने के प्रस्ताव पंच गौरव कार्यक्रम के तहत भिजवाये गए हैं।

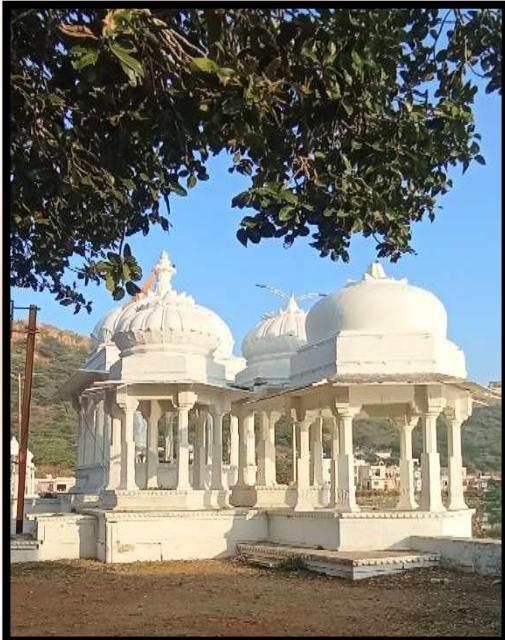


एक जिला एक पर्यटन – माण्डलगढ़ दुर्ग



मांडलगढ़ किले का परिचय

मांडलगढ़ किला राजस्थान के ऐतिहासिक किलों में से एक है, जो अपनी समृद्ध विरासत और युद्धों के गौरवशाली इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। यह किला भीलवाड़ा जिले में स्थित है और इसे प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण सैन्य स्थल माना जाता रहा है। किले का निर्माण प्राचीन राजपूत शासकों द्वारा किया गया था और यह कई ऐतिहासिक युद्धों का साक्षी रहा है। यह किला 1850 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और अपनी भव्य वास्तुकला के लिए जाना जाता है। मांडलगढ़ का नाम ऐतिहासिक दस्तावेजों में मंडल दुर्ग और मांडलगढ़ के रूप में भी उल्लेखित है। इस किले के निर्माण में मजबूत पत्थरों और ऊँची दीवारों का उपयोग किया गया है, जो इसकी रक्षा प्रणाली को दर्शाता है। इस क्षेत्र पर विभिन्न राजवंशों का शासन रहा, जिसमें गुहिल, राजपूत और मुगल शासक शामिल थे। मांडलगढ़ किला विशेष रूप से अपनी भौगोलिक स्थिति और रणनीतिक महत्व के कारण प्रसिद्ध रहा है। यह किला वर्तमान में ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संरक्षित किया जा रहा है और इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।



मांडलगढ़ किले में कई ऐतिहासिक छतरियाँ स्थित हैं, जो राजपूत योद्धाओं और शासकों की वीरगाथाओं का प्रतीक हैं। ये छतरियाँ राजवंशों की वास्तुकला और उनके गौरवशाली अतीत की झलक प्रस्तुत करती हैं। इनमें से कई छतरियाँ महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और अन्य राजपूत शासकों की स्मृति में बनाई गई थीं, जो इस क्षेत्र के गौरवशाली इतिहास को संजोए हुए हैं। मांडलगढ़ किला राजस्थान के ऐतिहासिक किलों में से एक है, जो अपनी समृद्ध विरासत और युद्धों के गौरवशाली इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। यह किला भीलवाड़ा जिले में स्थित है और इसे प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण सैन्य स्थल माना जाता रहा है।

किले का निर्माण प्राचीन राजपूत शासकों द्वारा किया गया था और यह कई ऐतिहासिक युद्धों का साक्षी रहा है। यह किला 1850 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और अपनी भव्य वास्तुकला के लिए जाना जाता है। मांडलगढ़ का नाम ऐतिहासिक दस्तावेजों में मंडल दुर्ग और मांडलगढ़ के रूप में भी उल्लेखित है। इस किले के निर्माण में मजबूत पत्थरों और ऊँची दीवारों का उपयोग किया गया है, जो इसकी रक्षा प्रणाली को दर्शाता है। इस क्षेत्र पर विभिन्न राजवंशों का शासन रहा, जिसमें गुहिल, राजपूत और मुगल शासक शामिल थे। मांडलगढ़ किला विशेष रूप से अपनी भौगोलिक स्थिति और रणनीतिक महत्व के कारण

प्रसिद्ध रहा है। यह किला वर्तमान में ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संरक्षित किया जा रहा है और इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।

मेवाड़ में मांडलगढ़ की भूमिका और महान राजाओं से संबंध

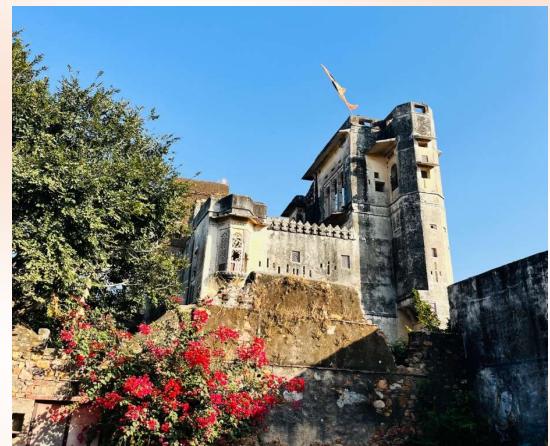
मांडलगढ़ किला मेवाड़ की सुरक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। यह किला कई महायुद्धों का केंद्र रहा, विशेष रूप से मेवाड़ के सिसोदिया राजाओं के शासनकाल में। महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा और महाराणा प्रताप जैसे वीर शासकों ने इस किले की रणनीतिक स्थिति का उपयोग शत्रुओं के खिलाफ किया।



महाराणा कुम्भा के समय यह किला एक प्रमुख सैन्य चौकी के रूप में विकसित हुआ। उनके शासनकाल में इसकी किलेबंदी को और मजबूत किया गया, जिससे यह मुगलों और दिल्ली सल्तनत की सेनाओं के लिए एक चुनौती बन गया। महाराणा सांगा ने भी इस किले का उपयोग अपने सैन्य अभियानों में किया और यह उनके शासनकाल में कई ऐतिहासिक लड़ाइयों का गवाह बना।

बाद में, महाराणा प्रताप के संघर्ष के दौरान, यह किला मेवाड़ की स्वायत्तता की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण गढ़ बना रहा। मुगलों और अन्य आक्रमणकारियों के खिलाफ यह किला कई बार लड़ा और मेवाड़ की वीरता का प्रतीक बना रहा।

इसका रणनीतिक महत्व और ऐतिहासिक गौरव इसे राजस्थान के प्रमुख किलों में से एक बनाता है। वर्तमान में, मांडलगढ़ किला अपने गौरवशाली अतीत की झलक प्रस्तुत करता है और इसे एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। मांडलगढ़ किला राजस्थान के ऐतिहासिक किलों में से एक है, जो अपनी समृद्ध विरासत और युद्धों के गौरवशाली इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। यह किला भीलवाड़ा जिले में स्थित है और इसे प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण सैन्य स्थल माना जाता रहा है। किले का निर्माण प्राचीन राजपूत शासकों द्वारा किया गया था और यह कई ऐतिहासिक युद्धों का साक्षी रहा है। यह किला 1850 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और अपनी भव्य वास्तुकला के लिए जाना जाता है।



मांडलगढ़ का नाम ऐतिहासिक दस्तावेजों में मंडल दुर्ग और मांडलगढ़ के रूप में भी उल्लेखित है। इस किले के निर्माण में मजबूत पत्थरों और ऊंची दीवारों का उपयोग किया

गया है, जो इसकी रक्षा प्रणाली को दर्शाता है। इस क्षेत्र पर विभिन्न राजवंशों का शासन रहा, जिसमें गुहिल, राजपूत और मुगल शासक शामिल थे। मांडलगढ़ किला विशेष रूप से अपनी भौगोलिक स्थिति और रणनीतिक महत्व के कारण प्रसिद्ध रहा है। यह किला वर्तमान में ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संरक्षित किया जा रहा है और इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।

हम मांडलगढ़ को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए निम्नलिखित सुविधाओं की योजना बना रहे हैं :—

सागर और सागरी के पास पार्क का विकास

हरियाली, फूलों की क्यारियां और छायादार बैठने की व्यवस्था।

आधुनिक शौचालयों का निर्माण (12 सीटें)

आधुनिक स्वच्छता सुविधाओं और जल संरक्षण तकनीकों से युक्त शौचालय।

नियमित रखरखाव और स्वच्छता सुनिश्चित करना।

दिव्यांगों के लिए अनुकूल सुविधाएँ।

किले की मरम्मत और रखरखाव

ऐतिहासिक संरक्षण तकनीकों का उपयोग कर किले की दीवारों और दरवाजों की बहाली।

प्राचीन स्वरूप बनाए रखते हुए संरचना को मजबूत करना।

किले के इतिहास की जानकारी देने वाले सूचना पट्टों की स्थापना।

पार्क में खेल उपकरणों की स्थापना

सुरक्षित और टिकाऊ झूले, फिसलपट्टी और चढ़ाई संरचनाएँ।

किले की सफाई और पेंटिंग

किले की सफाई के तहत, धूल, काई और अन्य अवांछित तत्वों को हटाया जाएगा ताकि इसकी प्राचीन सुंदरता बनी रहे। इसके अलावा, मौसम प्रतिरोधी पेंटिंग और प्रकाश व्यवस्था की जाएगी ताकि किला अधिक आकर्षक और संरक्षित रह सके।

पंच गौरव योजना के तहत विकास कार्य :—

राज्य सरकार द्वारा मांडलगढ़ किले के विकास के लिए शपंच गौरव योजनाश के तहत योजना बनाई गई है। इस हेतु लगभग 480 लाख रुपये का प्रस्ताव बनाया गया है, जिसे जल्द ही पूरा किया जाएगा।

एक जिला एक उपज – संतरा



संक्षिप्त विवरण :—

संतरा (सिट्रस रेटिकुलेटा) रुटेसी कुल का नींम्बू वर्गीय फल है। संतरा विटामिन सी, विटामिन बी समूह, विटामिन इ, कैल्शियम, पोटेशियम तथा फास्फोरस मिनरल्स का प्रमुख स्रोत है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि पोशक तत्वों तथा ऊर्जा भण्डार है। 100 ग्राम संतरा सेवन से लगभग 53 किलो कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। संतरे का सेवन ज्यूस सलाद, सिरप, जैम, स्कैश आदि रूप में किया जाता है। संतरा के पेड़ शीतरोधी व सूखा रोधी होते हैं। पौधे मध्यम ऊँचाई के तथा सीधे बढ़ने वाले होते हैं।

उत्पादन :—

भारत में संतरे का कुल क्षेत्रफल 428310 हैक्टेयर है जिसमें लगभग 5101210 मिट्रिक टन संतरे का उत्पादन होता है। राजस्थान में संतरे का कुल क्षेत्रफल 23190 हैक्टेयर है जिसमें 317680 मिट्रिक टन संतरे का उत्पादन होता है। भीलवाड़ा जिले में संतरा मुख्यतः मांडलगढ़ तहसील क्षेत्र के साथ साथ कोटडी, बिजौलियां में मुख्यतः उगाया जाता है जिले में संतरा का कुल क्षेत्रफल लगभग 236 हैक्टेयर है। जिले में संतरा की औसत उपज 15 से 20 टन प्रति हैक्टेयर प्राप्त होती है। जिले से संतरा मुख्यतः देश के महानगरों एवं श्रीलंका आदि जगह निर्यात किया जाता है।



जिले में संतरा को नई पहचान देने हेतु कार्ययोजना निर्मानुसार रहेगी :—

संतरा उत्पादन हेतु क्षेत्र का चयन :—

संतरा राजस्थान में उगाया जाना वाला प्रमुख फल है। संतरा के अच्छे उत्पादन के लिए अच्छे जल निकास वाली काली चिकनी दोमटी मिट्टी जिसमें पर्याप्त जलधारण क्षमता हो उपयुक्त रहती है, मिट्टी का पी.एच. मान 7.0 से 8.0 होना उपयुक्त रहता है। संतरे के लिये गर्म पाला रहित तथा न्यूनतम 800 एम.एम वार्षिक वर्षा आवश्यक है। इस प्रकार संतरा उत्पादन के लिए भीलवाड़ा जिले में मांडलगढ़, बिजौलियां, कोटडी का बड़लियास एवं सवाईपुर क्षेत्र तथा जहाजपुर का आंशिक क्षेत्र उपयुक्त है।

संतरा उत्पादक कृषकों का चयन :-

संतरा उत्पादक क्षेत्र में संबंधित क्षेत्र के कृषि पर्यवेक्षक, कृषि/उद्यान के द्वारा सघन सर्वे एवं प्रचार प्रसार कर संतरा उत्पादक कृषकों को सूचीबद्ध किया जायेगा। रक्बा बढ़ाने के लिए कृषकों का चयन किया जाकर संतरा उद्यान में भ्रमण कराया जायेगा।

संतरा उत्पादक कृषकों को प्रशिक्षण एवं भ्रमण :-

किसानों को संतरे की खेती के बारे में तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने हेतु कृषकों के दल को आत्मा/कृषि विभाग/उद्यान विभाग/कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा समय—समय पर प्रशिक्षण तथा कृषकों के दलों को राज्य/राष्ट्रीयकृत स्तर पर संतरा उत्पादक क्षेत्रों में भ्रमण एवं साहित्य उपलब्ध कराकर तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराया जायेगा। संतरा फसल की Good Agricultural Practices (GAP) के लिए MPUAT के विशेषज्ञों द्वारा प्रोटोकोल तैयार करवाकर किसानों को उपलब्ध कराये जायेगे। जिससे गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकेगा। किसानों को वर्षवार आयोजित होने वाले कृषि संबंधी प्रदर्शनियों एवं जिला तथा राज्य स्तर मेलों में भिजवाकर उनके उत्पाद की प्रदर्शनी लगाकर बेचने हेतु प्लेटफार्म उपलब्ध कराया जायेगा।

संतरा उत्पादक कृषकों का वॉट्सअप ग्रुप निर्माण :-

संतरा उत्पादक सभी कृषकों को एक वॉट्सअप ग्रुप निर्माण कर उससे जोड़ा जायेगा, ताकि उनको समय—समय पर समसामयिक तकनीकी जानकारी/मण्डी भाव, मौसम के बारे में जानकारी, ट्रेनिंग प्रुनिंग/इरिगेशन भोड़यूल/ पौध संरक्षण के बारे में जारी उपलब्ध करा सके।

● संतरा उत्पादक कृषकों का समूह निर्माण :-

संतरा उत्पादक किसानों का समूह (FPO) बनाकर सभी किसानों को इसमें जोड़ा जाएगा। जिसके माध्यम से किसानों को संतरा के प्रसंस्करण हेतु ग्रेडिंग, अग्र एवं पश्च लिंकिंग मूल्य सर्वद्वन् तथा विपणन प्लेटफार्म संबंधी सुविधाओं का विकास सम्भव होगा। जहां से उन्हे उनके उत्पाद को बेचने/ प्रसंस्करण करने में सहायता मिलेगी।

- संतरा प्रसंस्करण कार्य :—

संतरा विटामिन सी, विटामिन बी समूह, विटामिन ए, कैल्शियम, पोटेशियम तथा फार्स्फोरस मिनरल्स का प्रमुख स्त्रोत है। संतरे से कई तरह के उत्पाद बनते हैं, जैसे कि संतरे का रस, संतरा प्लब, पेकिटन, आवश्यक तेल, संतरे के छिलके का पाउडर इत्यादि कई तरह के उत्पाद बनते हैं। संतरे के तेल के कुछ अंशों का इस्तेमाल औद्योगिक क्लीनर में किया जाता है। संतरा के विभिन्न उत्पादों के निर्माण हेतु कृषकों को कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण आयोजित कराकर उनका क्षमता निर्माण (Capacity Building) किया जायेगा।

उपरोक्त कार्य योजना के सफल क्रियान्वयन एवं संचालन के लिए उद्यान विभाग के साथ-साथ कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, आत्मा विभाग, एवं विश्वविद्यालय के विषय विशेषज्ञ का योगदान महत्वपूर्ण रहेगा। इस हेतु निम्नानुसार जिला स्तरीय अधिकारियों एवं विशेषज्ञों की कमेटी का गठन किया जाना है।

- संयुक्त निदेशक कृषि (वि०) भीलवाड़ा
- उप निदेशक उद्यान, भीलवाड़ा
- उप निदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक आत्मा, भीलवाड़ा
- प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाड़ा
- विषय विशेषज्ञ, उद्यानिकी, कृषि महाविद्यालय, भीलवाड़ा
- विषय विशेषज्ञ, कीट, कृषि महाविद्यालय, भीलवाड़ा
- विषय विशेषज्ञ, पोध व्याधि, बारानी कृषि अनुसंधान केन्द्र, आरजिया।
- सचिव, कृषि उपज मण्डी, भीलवाड़ा।

- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय व्यय (लाख रुपयों में) —

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	प्रस्तावित व्यय / वास्तविक व्यय (लाख में)	वि०वि०
1	कृषक प्रशिक्षण / सेमीनार	1.50	147 कृषकों को सेमीनार का आयोजित कर प्रशिक्षित किया गया
2	कृषक भ्रमण कार्यक्रम	1.50	45 कृषकों को संतरा उत्पादक क्षेत्रों में भ्रमण करवाया गया।
3	नवीन बगीचा स्थापना	6.0	राष्ट्रीय बागवानी मिशन अन्तर्गत देय मद से व्यय किया जाएगा।

पंच गौरव कार्यक्रम अन्तर्गत जिला स्तर पर आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में पंच गौरव प्रदर्शनी



जिला उद्योग मेले में पंच गौरव प्रदर्शनी

दैनिक नवज्योति

bhilwara - 06 Feb 2025 - Page 12

इरपरलाल भाल न आशार जीवा।



भीलवाड़ा में आयोजित कृषक सेमीनार को संबोधित करते हुये।

संतरे को जिले का प्रमुख प्रोडक्ट बनाने के लिए करें उच्चत स्तरीय

संतरा एवं सब्जी उत्पादन पर कृषक सेमीनार शुरू

न्यूज सर्विस/नवज्योति, भीलवाड़ा

कृषि विज्ञान केन्द्र पर गण्डीय बागवानी मिशन योजनानामूलक उद्यानिकी फसलों को उन्नत कृषि विधियाँ, संतरा उत्पादन एवं संरचित खेतों की आधुनिक तकनीकी विधियाँ पर दो दिवसीय जिला स्तरीय कृषक प्रशिक्षण सेमीनार का आयोजन किया गया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. सी. एम. यादव ने अविधियों का स्वापात थर्सेज/अविरक्त निदेशक इन्ड्र सिंह संतरीयों ने एक जिला एवं प्रोडक्ट के क्षेत्र में काम करते हुए संतरा का जिला का प्रमुख प्रोडक्ट बनाना हेतु उन्नत खेतों करने का सुझाव दिया। संतरों का विपणन, प्रस्तुकरण एवं नियन्त्रण का बढ़ावा देने के साथ ही जिले में संतरा प्रस्तुकरण इकाई स्थापित करने की आवश्यकता जताई। संतुष्ट निदेशक उद्यान महंश चंद्र जेजारा ने वर्तमान समय में किसानों को एक और कृषि विपणन एवं दूसरी अखंड उन्नत कृषि पर रखने की आवश्यकता जताई। जेजारा ने किसानों को संतरा एवं संरचित खेतों के माध्यम से आजीविका व आमदानी बढ़ाने का सुझाव दिया। संतुष्ट निदेशक, कृषि विस्तार विनोद कुमार जैन ने राजस्थान सरकार द्वारा संचालित कृषि

सम्बन्धित योजनाओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की एवं पारंपरार रजिस्ट्रेशन अधियान की जानकारी दी। उपनिदेशक उद्यान डॉ. योगर सिंह राठोड़ ने पौधार किसान सम्मान निधि योजना, किसान क्लोइट कार्ड, न्यूनतम समर्पण मूल्य पर फसल विक्री के साथ-साथ उद्यान विभाग की योजनाएँ डिप एवं फसलारा इरिनेशन, मल्लिंग एवं लॉटन के माध्यम से किसानों का जीनवर्धन किया। राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर के प्रोफेसर डॉ. एस.एस. लखावत ने जिले में सरकारी खेतों को संभावनाएँ एवं आवश्यकताएँ के साथ ही संतरा उत्पादन तकनीकों के बारे में बताया। सहायक आचार्य डॉ. वी.जी. छोपा ने लाहौर, प्याज की आधुनिक कृषि विधियाँ एवं रख-रखाव और सब्जियों की खेतों की आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी दी। कृषि विज्ञान केन्द्र शाहपुरा के सह आचार्य डॉ. राजेश जलवानीयों ने फूलों की आधुनिक कृषि विधियाँ एवं रख-रखाव के साथ ही उद्यानिक फसलों में कॉट प्रबन्धन की जानकारी से अवगत कराया। प्रशिक्षण में जिले की कृषि विधियाँ एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया।



भीलवाड़ा महोत्सव
उद्घोग एवं व्यापार मेला 2025

टकस्टाइल उत्पाद

माण्डलगढ़ फोर्ट

बांस्केटबाल

संतरा

पंच गौरव
भीलवाड़ा